ॐ श्रीहनुमते नमः ॐ

अथ *M.Katyayana*

एकमुखी पञ्चमुखीहनुमत्कवच

भाषा टीका

सम्पादक : पं० मदन कुमार झा

प्रकाशक : ज्ञान गंगा एण्ड को० पब्लिशर्स

IX/1752 गली नं० 6, कैलाशनगर, दिल्ली-110 031

✆ : 2044727

मूल्य-१०.००

* पूजाविधि और सामग्री *

प्रातः स्नान-सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म से निवृत होकर, श्रीहनुमानजी के मन्दिर में जाकर मूर्ति के सम्मुख मुख करके, शुद्धासन पर बैठ कर और (अपवित्रः पवित्रो वा) से अपने शरीर तथा सामग्री पर जल छिड़ककर नीचे लिखा संकल्प हाथ में जल-पुष्प लेकर बोलें- "अद्योत्यादि देशकालाद्युच्चार्य अमुकनामोऽहं श्रीहनुमतः प्रीत्यर्थम् श्रीहनुमतः पूजापूर्वकमेकमुखिहनुमत्कवचस्य पञ्चमुखि हनुमत्कवचस्य वा पाठं करिष्ये" संकल्प का जल पात्र में छोड़ दें। फिर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से श्रीराम- वन्दना पूर्वक श्रीहनुमानजी की पूजा करें- पाद्य अर्घ, आचमनीय स्नानीय, पञ्चामृतस्नान, आचमन, सुगन्धित जलस्नान, सिन्दूरोद्वर्तन, पुनःस्नानाचमन वस्त्रयुगल यज्ञोपवीत, आचमन, गन्ध, अबीर आदि पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, आचमन, करोद्वर्तनार्थचन्दन सुखवासार्थ, ताम्बूल, पूगीफल, दक्षिणा, प्रदक्षिणा, आरती, मन्त्रपुष्पाञ्जलि ।

विशेष–दक्षिणा के बाद हनुमत्कवच का पाठ करें और फिर पाठ के अनन्तर प्रदक्षिणा, आरती और मन्त्रपुष्पाञ्जली करनी चाहिये । यह सब करके हाथ जोड़कर खड़े होकर श्रीहनुमानजी से क्षमा-प्रार्थना कर प्रसाद लें, इस प्रकार प्रतिदिन करते रहना चाहिए । यदि प्रतिदिन पूजा पूर्वक कवच का पाठ न कर सकें, तो सन्ध्यावन्दनान्तर केवल कवच तथा नामों का पाठ तो कर लेना ही चाहिये और मंगलवार को तो पूजा पूर्वक ही कवच का पाठ करना अत्यन्त आवश्यक है ।

इस तरह करने से आञ्जिनेय श्रीहनुमानजी के परमभक्त साधकों के सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं, इनमें सन्देह नहीं । यह सब आर्ष-ग्रन्थों में विस्तार से दिया गया है, यहाँ संक्षेप में साधकों के निमित्त हमने लिखा है।

क्षमाप्रार्थनाश्लोक

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतं । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद पवनात्मज ॥१॥

हनुमन्नञ्जनीपुत्र ! सच्चिदानन्दविग्रह । गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद पवनात्मज ॥२॥

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतंत्विदम् । सिद्धिर्भवतु मे देव प्रसीद हनुमन् प्रभो ॥३॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जनामि क्षमस्व परमेश्वरम् ॥४॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम । तस्मात् कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥५॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं कपीश्वर । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥६॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद हनुमन् प्रभो ॥७॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व हनुमन् प्रभो ॥८॥

* श्रीवातात्मजाय नमः *

* अथ एकमुखी पञ्चमुखी *

卐 हनुमत्कवचमारभ्यते 卐

तत्र च पूर्वम्

एकमुखी हनुमत्कवचम्

मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यम्, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

अथ श्रीहनुमते नमः

एकदा सुखमासीनं शंकरं लोकशंकरम् ।
प्रपच्छ गिरिजाकान्तं कर्पूरधवलं शिवम् ॥

पार्वत्युवाच-भगवन् देवदेवेश, लोकनाथ जगद्गुरो । शोकाऽकुलानां लोकानां केन रक्षा भवेद्ध्रुवम् ॥२॥ संग्रामे संकटे घोरे, भूतप्रेतादिके भये । दुःखदावाग्निसन्तप्तचेतसां दुःखभोगिनाम् ॥३॥ ईश्वर उवाच-शृणु देवि प्रवक्ष्यामि लोकानां हितकाम्यया । विभीषणाय रामेण, प्रेम्णा दत्तं च यत्पुरा ॥४॥ कवचं कपि-नाथस्य वायुपुत्रस्य धीमतः । गुह्यं ते संप्रवक्ष्यामि विशेषाच्छृणु सुन्दरि ॥५॥

एक समय आनन्द से बैठे हुए समस्त लोकों के कल्याण करने वाले कर्पूर के समान श्वेत वर्ण गिरिजाकान्त श्री शंकर जी से पार्वतीजी ने पूछा-हे भगवान्! देवदेवाधिपते! विश्वनाथ! जगद्गुरो! शोकाकुल हुए मनुष्यों की किस उपाय से निश्चित करके रक्षा होती है ॥२॥ संग्राम में, घोर संकट में तथा भूत-प्रेतादिकों के भय में, दुःखरूपी दावानल से संतप्त, दुःखी भोगी मनुष्यों की किस उपाय से रक्षा हो सकती है । हे भगवन्! यह कहिये ॥३॥ फिर भगवान् आशुतोष श्रीशंकरजी बोले- हे देवि ! मैं तुमसे समस्त संसार के हितकी कामना के लिये प्रेम-पूर्वक उपाय बताता हूँ जो कि श्रीरामचन्द्रजी ने पहिले विभीषण के लिए दिया था ॥४॥ हे सुन्दरि! मैं पवनसुत कपिनाथ (हनुमानजी) का, जो कि बुद्धिमान हैं अत्यन्त गुह्य कवच विशेषता पूर्वक तुमसे कहता हूँ। तुम सुनो ॥५॥

卐 अथ कवचारम्भः 卐

ॐ अस्य श्री हनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्री महावीरो हनुमान देवता। मारुतात्मज इति बीजम्। ॐ अञ्जनी सूनुरिति शक्तिः। ॐ हैं ह्रीं ह्रौं इति कवचम्। ॐ स्वाहा इति कीलकम्। ॐ लक्ष्मणप्राणदाता इति बीजम्। मम सकलकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

* अथन्यास *

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ

अंजनीसूनवे हृदयाय नमः। ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुसुतात्मने शिखायै वषट्। ॐ वज्रदेहाय कवचाय हुँ। ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारणाय अस्त्राय फट्॥ ॐ रामदूताय विद्महे, कपिराजाय धीमहि, तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्। ॐ हुँ फट् इति दिग्बन्धः॥ ध्यायेद्बालदिवाकरद्युतिनिभं देवारिदर्पापहं। देवेन्द्रप्रमुखप्रशस्तयशसं देदीप्यमानं रुचा॥

इस हनुमत्कवच स्तोत्रमंत्र के 'श्रीरामचन्द्रजी' ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, 'श्रीमहावीर हनुमान् देवता' एवं 'मारुतात्मज' बीज तथा 'अञ्जनीसूनु' शक्ति है। 'ॐ हैं ह्रीं' यह कवच है, 'ॐ स्वाहा' यह कीलक है। 'ॐ लक्ष्मणप्राणदाता' यह बीज है। मेरे समस्त अभीष्ट कार्यों की सिद्धि के लिये विनियोग है। (ऐसा कहे)। इसके पश्चात आशुतोष श्री शंकरजी अंगन्यास कहते हैं 'ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां से लेकर अस्त्राय फट्' तक अंगन्यास एवं 'रामदूताय विद्महे कपिराजाय धीमहि तन्नो हनुमान् प्रचोदयात्' से दिग्बन्ध करें। तत्पश्चात् ध्यान करें।

प्रातः कालिक सूर्य की कान्ति के तुल्य कान्ति वाले, राक्षसों के घमण्ड को नष्ट कर देने वाले,

सुग्रीवादिसमस्तवारयुतं सुव्यक्ततत्त्वप्रियम् । संरक्तारुणलोचनं पवनजं पीताम्बरालंकृतम् ॥१॥ उद्यन्मार्तण्डकोटिप्रकटरुचियुतं चारुवीरासनस्थम् । मौञ्जीयज्ञोपवीतारुणरुचिरशिखशोभितं कुण्डलांकम् ॥ भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुनिजनं, वेदनाप्रमोदम् । ध्यायेद्देवं निधेयं प्लवगकुलपतिं गौष्पदीभूतवार्द्धिम् ॥२॥ वज्रांगं पिंगकेशाढ्यं

देवेन्द्रादि प्रधान देवताओं द्वारा गान की हुई प्रशस्त कीर्ति वाले, कान्ति से देदीप्यमान, सुग्रीवादि समस्त वानरों से युक्त, सुव्यक्त तत्त्व प्रेमी, लाल नेत्रों वाले, पीले पीले वस्त्रों से अलंकृत भगवान पवनकुमार श्रीहनुमानजी का ध्यान करें ॥१॥ उदीयमान करोड़ सूर्यों के समान प्रकट कान्ति वाले, सुन्दर वीरासन में स्थित, मौञ्जी मेखला, यज्ञोपवीत तथा लाल रंगकी सुन्दर शिखा से सुशोभित तथा कुण्डलधारी भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले, मुनिजनों से प्रणत, वेद की स्तुतियों से प्रसन्न, लाँघने के समय जिनके लिये समुद्र भी गौ का खुर जैसा हो गया था, ऐसे वानर-कुलपति भगवान श्रीहनुमानजी का स्मरण करें ॥२॥ वज्र के समान अंग वाले, पीले-पीले केशों वाले, स्वर्ण के कुण्डलों से मण्डित, युद्धकर्म में कुशल, समुद्र तुल्य अथाह पराक्रम वाले श्रीहनुमानजी का स्मरण करें ॥३॥

स्वर्णकुण्डलमण्डितम् । नियुद्धकर्मकुशलं पारावारपराक्रमम् ॥३॥ वामहस्ते महावृक्षं दशास्यकरखण्डनम् । उद्यद्दक्षिणदोर्दण्डं, हनुमन्तं विचिन्तयेत् ॥४॥ स्फटिकाभं स्वर्णकांतिम् द्विभुजं च कृताञ्जलिम् । कुण्डलद्वयसंशोभिमुखम्भोजं हरिं भजेत् ॥५॥ उद्यदादित्यासंकाशमुदारभुजविक्रमम् । कन्दर्पकोटिलावण्यं सर्व-

बायें हाथ में महावृक्ष को लिये हुए, रावण की सेना का विनाश करने वाले, उठाये हुए दाहिने हाथ वाले ऐसे हनुमानजी का चिन्तन करें ॥४॥ स्फटिक शिला के समान चमकते हुए सोना के समान कान्ति वाले, दो भुजाओं वाले, बाँधे हुए अंजलि वाले, दोनों कुण्डलों से शोभित हो रहा है मुखकमल जिनका, ऐसे श्रीहनुमानजी का स्मरण करें ॥५॥ उदय होते हुए भगवान सूर्य के समान कांति वाले एवं उदार बाहुपराक्रम वाले करोड़ों कामदेवोंके समान लावण्य वाले, सकल विद्याओं में प्रवीण श्रीहनुमानजी का ध्यान करें ॥६॥ श्रीरामचन्द्रजी के हृदय को आनन्द देने वाले, कल्पवृक्ष के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाले, दोनों भुजाओं से अभय एवं वरदान देने वाले मारुतात्मज (श्रीपवनसुत) हनुमानजी का मैं चिन्तन करता हूँ ॥७॥ हे अपराजित! (किसी से भी पराजय) (हार) न प्राप्त करने वाले

विद्याविशारदम् ॥६॥ श्रीरामहृदयानन्दं भक्तकल्पमहीरुहम् । अभयं वरदं दोर्भ्यां, कलये मारुतात्मजम् ॥७॥ अपराजित नमस्तेऽस्तु नमस्ते रामपूजित। प्रस्थानञ्च करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥८॥ यो वारां निधिमल्पपल्वलमिवोल्लंघ्य प्रतापान्वितो वैदेहीघनशोक-तापहरणो वैकुण्ठतत्त्वप्रियः। अक्षाद्यूर्जितराक्षसेश्वरमहादर्पापहारी रणे सोऽयं वानरपुंगवोऽवतु सदा युष्मान् समीरात्मजः ॥९॥ वज्रांगं

अपितु सर्वदा विजयी) हे हनुमन्! आपके लिये नमस्कार है । हे रामपूजित! (रामचन्द्रजी के द्वारा प्रशंसा किये गये) हे हनुमन्! आपको नमस्कार है । हे देवदेव! मैं प्रस्थान करता हूँ, सर्वदा मेरी सिद्धि होती रहे ॥८॥ जो समुद्र को एक छोटे-से पोखरा (सरोवर) के समान लाँघकर प्रताप युक्त हुए हैं, और जो सीताजी के कठिन शोकरूपी ताप के निवारण करने वाले हैं तथा जो वैकुण्ठ तत्त्व श्रीराम के प्रिय हैं, अक्षादि से बढ़े हुए राक्षसेश्वर रावण के महान गर्व को नाश करने वाले हैं, ऐसे वानर श्रेष्ठ समीरात्मज (वायुपुत्र) हम लोगों की सदा रक्षा करें ॥९॥ वज्र के तुल्य दृढ़ अंगों वाले, पीले केशों

पिंगकेशं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रान्तगण्डम्, नानाविद्याधिनाथं करतलविधृतं पूर्णकुम्भं दृढं च । भक्ताभीष्टाधिकारं वितरति च सदा सर्वदा सुप्रसन्नं, त्रैलोक्यत्राणकारं सकलभुवनगं रामदूतं नमामि ॥१०॥ उद्यल्लाङ्गूलकेशं, प्रचयजलधरं भीममूर्तिं कपीन्द्रं वन्दे रामाङ्घ्रिपद्मभ्रमरपरिवृतं तत्त्वसारं प्रसन्नम् ।

वाले, सोने के चमकते हुए कुण्डलों से सुशोभित गण्डस्थल (कपोलभाग) वाले, अनेक प्रकार की विद्याओं के अधिपति, दृढ़ तथा पूर्ण कुम्भ को करतल में धारण किये हुए, भक्तों के मनोरथ को सिद्ध करने वाले, सर्वदा सुप्रसन्न रहने वाले, तीनों लोकों की रक्षा करने वाले, सकल भुवनगामी श्रीराम दूत हनुमानजी को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१०॥ जिनकी पूँछ के केश ऊपर को उठे हुए हैं, गाढ़े बादलों के समान विस्तृत, भीम-मूर्ति, रामचन्द्रजी के चरण कमलों के भ्रमर के समान परिवृत, तत्त्वज्ञानी सुप्रसन्न चित्त वाले, वज्रांग, वज्रस्वरूप, चमकते हुए स्वर्ण के कुण्डलों से सुशोभित कपोलों वाले, वज्र-स्तम्भ के से महान् सार (स्थिरांश) वाले तथा प्रहार करने में विकट, भूतों एवं राक्षसों के स्वामी कपीन्द्र श्रीहनुमानजी की मैं वन्दना करता हूँ ॥११॥ वाम भुजा में शत्रुओं के लिये भय को धारण करने वाले,

वज्रांगं वज्ररूपं कनकमयलसत्कुण्डलाक्रांतगण्डम् दम्भोलिस्तम्भ-सारं प्रहरणविकटं भूतरक्षोऽधिनाथम् ॥११॥ वामे करे वैरिभयं वहन्तं शैलं च दक्षे निजकंठलग्नम् । दधानमासाद्य सुवर्णवर्णं भजेज्जवलत्कुण्डलरामदूतम् ॥१२॥ पद्मरागमणिकुण्डलत्विषा पाटलीकृतकपोलमंडलम् । दिव्यदेवकदलीवनान्तरे भावयामि पवमाननन्दनम् ॥१३॥ ईश्वर उवाच इति वदति

निज कंठ के पास संलग्न, पर्वत को दाहिनी भुजा में लिये हुए, सुवर्ण वर्ण के समान कान्तिमान् चमकते हुए कुण्डलों वाले श्रीराम-दूतों को मैं भजता हूँ ॥१२॥ पद्मराग मणिमय कुण्डलों की कान्ति से लाल हो गया है कपोल मंडल जिनका, ऐसे दिव्य देवताओं के एवं कदली वनान्तर में स्थित श्रीपवन नन्दन हनुमानजी का मैं स्मरण करता हूँ ॥१३॥ श्रीशंकरजी पार्वतीजी से कहते हैं कि इस प्रकार श्रीरामचन्द्रजी राक्षसेन्द्र (विभीषण) से विशेष प्रकार से कह रहे थे और विभीषण इस आख्यान को सुनकर ही प्रमुदित चित्त होकर अपने को परम धन्य मानते हुए अनेकानेक स्तुतियों से श्री हनुमानजी की पूजा

विशेषाद्राघवो राक्षसेन्द्रं प्रमुदितवराचित्तोरवणस्यानुजो हि । रघुवरवरदूतं पूजयामास भूयः स्तुतिभिरतिकृतार्थं स्वं परं मान्यमानः ॥१४॥ वन्दे विद्युद्वलयसुभगं स्वर्णयज्ञोपवीतं कर्णद्वन्द्वे कनकरुचिर कुण्डले धारयन्तम् । उच्चैर्हृष्यद् मणिकिरण श्रेणिसंभाविताङ्गम् सत्कौपीनं कपिवरवृतं कामरूपं कपीन्द्रम् ॥१५॥ मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमत्तां वरिष्ठम् । वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं सततं स्मरामि ॥१६॥

करते जाते थे ॥१४॥ विद्युत् के बलय समान सुन्दर शरीर वाले, स्वर्ण के यज्ञोपवीत को धारण किये हुए, एवं दोनों कानों में सुन्दर स्वर्ण के कुण्डल धारण करने वाले, मध्याह्न के सूर्य की चमकती हुई किरण पंक्तियों के तुल्य चमकते हुए अंगों वाले, सुन्दर कौपीनधारी, कपिवरों के समूह में बैठे हुए स्वेच्छानुसार रूप धारण करनेवाले कपिराज को मैं प्रणाम करता हूँ ॥१५॥ मन के समान शीघ्रगामी, वायु तुल्य वेग शील, जितेन्द्रिय, बुद्धिमानों में श्रेष्ठ, वानरों के समूह में सर्वश्रेष्ठ, वातात्मज श्रीरामदूत हनुमानजी का मैं सर्वदा स्मरण करता हूँ ॥१६॥

* अथाङ्गन्यासः *

ॐ नमो भगवते हृदयाय नमः । ॐ आञ्जनेयाय शिरसे स्वाहा । ॐ रूद्रमूर्तये शिखायै वषट् ॥ ॐ रामदूताय कवचाय हुम् ॥ ॐ हनुमते नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ अग्निगर्भाय अस्त्राय फट् ॥ ॐ नमो भगवते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ आञ्जनेयाय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ रुद्रमूर्तये मध्यमाभ्यां नमः । ॐ वायुसूनवे अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अग्निगर्भाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

इस प्रकार से अंगन्यास करें तथा भूत, प्रेत, पिशाच, शाकिनी, डाकिनी, पूतना, महामारी आदि तथा भूत, भविष्य, वर्तमान काल के सकलारिष्ट दोषों को दूर करने वाले हनुमानजी के निम्नलिखित मन्त्रों का एक स्वर से पाठ करें ।

* अथ मन्त्राः *

ऊँ एं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः । ऊँ ह्रीं ह्रौं ऊँ नमो भगवते महाबलपराक्रमायभूतप्रेतपिशाचशाकिनीडाकिनीयक्षिणी पूतनामारीमहामारी यक्षराक्षस भैरववैतालग्रहराक्षसादिकं क्षणेन हन हन भञ्जय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामहेश्वर रुद्रावतार हूँ फट् स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते हनुमदाख्याय रुद्राय सर्वदुष्टजनमुखस्तम्भनं कुरु कुरु ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ठं ठं ठं फट् स्वाहा । ॐ नमो भगवते अञ्जनीगर्भसम्भूताय रामलक्ष्मण नन्दनाय कपिसैन्य प्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय कुमार सुग्रीवकार्यसाधनाय दुष्टकरणोच्चाटनाय कुमारब्रह्मचारिणे गम्भीरशब्दोदयाय ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूँ सर्वदुष्टनिवारणाय स्वाहा । ॐ नमो हनुमते

सर्वग्रहान् भूतभविष्यद्वर्तमानान्दूरस्थान् समीपस्थान् सर्वकालदुष्टदुर्बुद्धीन् उच्चाटय उच्चाटय, परबलानि क्षोभय क्षोभय, मम सर्वकार्यं साधय साधय, हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट् देहि, ॐ शिवम् ॐ सिद्ध ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ॐ स्वाहा । ॐ नमो हनुमते परकृतयन्त्रमन्त्रपराहंकराभूतप्रेतपिशाचपरदृष्टि-सर्वविघ्नदुर्जनचेटकविद्याः सर्वग्रहान् निवारय निवारय, वन्ध वन्ध, पच पच, दल दल, कीलय कीलय सर्वकुयन्त्राणि दुष्टवाचं फट् स्वाहा ॥ ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि, एहि एहि, सर्वग्रहभूतानां शाकिनीडाकिनीनां दुष्टानां सर्वविषयान् आकर्षय, आकर्षय मर्दय मर्दय, भेदय भेदय, मृत्युमुत्पाटय उत्पाटय, शोषय शोषय, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, भूतमण्डलं निरसय निरसय भूतज्वर प्रेतज्वर तार्तीयक-चातुर्थिकज्वर-

विषमज्वर-माहेश्वर ज्वरान् छिन्धि छिन्धि, भिन्धि भिन्धि, अक्षिशूलवक्षः शूलशिरोऽभ्यन्तरशूलगुल्मशूलपित्तशूल ब्रह्मराक्षसकुल परकुलनागकुल विष नाशय नाशय, विर्विघ्नं कुरु कुरु फट् । ॐ ह्रीं सर्व दुष्टग्रहान्निवारय स्वाहा । ॐ नमो हनुमते पवनपुत्राय वैश्वानरमुखाय हन हन पापदृष्टिं, षण्ढदृष्टिं हन हन, हनुमदाज्ञया स्फुर स्वाहा ॥

इस तरह से ऊपर कथित गद्य भाग को सावधानता पूर्वक कहें, इसके बाद निम्नलिखित कवच का पाठ करें ॥

श्रीरामचन्द्र उवाच-हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः । पातु प्रतीच्यां रक्षोघ्नः पातु सागरपारगः ॥१॥ उदीच्यामूर्ध्वगः

पातु केसराप्रियनन्दनः । अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः ॥२॥ अवान्तरदिशः पातु सीताशोकविनाशनः ॥ लंकाविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ॥३॥ सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः । भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ॥४॥ नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः । कपोलौ कर्णमूले तु पातु श्रीरामकिंकरः ॥५॥ नासाग्रमजनीसूनुर्वक्त्रं

फिर श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि हनुमानजी पूर्व दिशा में रक्षा करें, पवनात्मज दक्षिण दिशा में एवं राक्षसों के विनाशक सागर के पारगामी पश्चिम में रक्षा करें ॥१॥ ऊर्ध्वगमनशील केशरी के प्रिय पुत्र उत्तर में रक्षा करें एवं विष्णुभक्त नीचे की ओर तथा पवन पुत्र मध्य में रक्षा करें । ॥२॥ सीता के शोक-विनाशक अवान्तर दिशाओं में रक्षा करें तथा लंकाविदाहक कपीन्द्र समस्त आपत्तियों से निरन्तर रक्षा करें ॥३॥ सुग्रीव सचिव मस्तक की, वायुनन्दन भाल की एवं दोनों भ्रुवों के मध्य भाग की महावीरजी रक्षा करें ॥४॥ दोनों नेत्रों की छायापहारी एवं कपोलों की रक्षा प्लवगेश्वर करें तथा कर्णमूलकी श्रीराम किंकरजी रक्षा

पातु हरीश्वरः । वाचं रुद्रप्रियः पातु जिह्वां पिंगललोचनः ॥६॥ पातु दन्तान्फाल्गुनेष्टश्चिबुकं दैत्यप्राणहृत् । पातु कंठञ्च दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरार्चितः ॥७॥ भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः । नखान्नखायुधः पातु कुक्षिं पातु कपीश्वरः ॥८॥ वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः । लंकाविभंजनः पातु पृष्ठदेशं निरन्तरम् ॥९॥ नाभिं च रामदूतोऽसौ कटिं पात्वनिलात्मजः।

करें ॥५॥ नासिका के अग्रभाग की रक्षा अंजनी सूनु करें, एवं मुख की रक्षा हरीश्वर तथा वाणी की रक्षा रुद्रप्रिय और जिह्वा की रक्षा श्री पिंगललोचन करें ॥६॥ दाँतों की रक्षा श्री फाल्गुनेष्ट करें एवं चिबुक (ठोड़ी) की रक्षा दैत्य प्राणहृत करें, तथा कण्ठ की दैत्यारि, एवं दोनों स्कन्धों की सुरपूजित रक्षा करें ॥७॥ महातेजस्वी दोनों भुजाओं की व दोनों हाथों की रक्षा चरणायुध करें, एवं नखों की रक्षा श्री नखायुध करें तथा कुक्षि की रक्षा श्री कपीश्वर जी करें ॥८॥ मुद्रापहारी (अंगूठी ले जाने वाले) वक्षस्थल की रक्षा करें तथा वक्षस्थल के आस-पास भुजायुध की रक्षा करें । लंका का विनाश करने

गुह्यं पातु महाप्रज्ञः सक्थिनी च शिवप्रियः ॥१०॥ ऊरू च जानुनी पातु लंकाप्रासादभंजनः । जंघे पातु महाबाहुर्गुल्फौ पातु महाबली ॥११॥ अचलोद्धारकः पातु पदौ भास्करसन्निभः । पदान्ते सर्वसत्वायः पातु सर्वाङ्गलीस्तथा ॥१२॥ सर्वाङ्गानि महावीरः पातु रोमाणि चात्मवान् । हनुमत्कवचं यस्तु पठेद्विद्वान् विचक्षणः ॥१३॥ स एव पुरुषश्रेष्ठो, भुक्ति मुक्तिञ्च विन्दति । त्रिकालमेककालं

वाले श्री हनुमानजी सर्वदा पृष्ठ भाग की रक्षा करें ॥९॥ श्री रामदूत नाभि की रक्षा करें एवं अनिलात्मज (वायु सुत) कटि की, महाप्रज्ञ (अत्यन्त बुद्धिशाली) गुह्यांगों की तथा सक्थियों (जंघाओं) की रक्षा श्री शिवप्रिय करें ॥१०॥ ऊरू (जांघों के नीचे वाले भाग की) एवं जानुओं की रक्षा लंकाप्रासाद भंजन (लंका के बड़े महलों को तहस नहस कर देने वाले) करें । महाबाहु जंघाओं एवं गुल्फों (घुटनों) की रक्षा महाबली करें ॥११॥ चरणों की रक्षा श्री अचलोद्धारक (पहाड़ उठाने वाले) करें, भास्करसन्निभ (सूर्य के समान तेजस्वी) चरणों की रक्षा करें, तथा समस्त अंगलियों की रक्षा सर्वसत्वाढय करें ॥१२॥

वा पठेन्मासत्रयं सदा ॥१४॥ सर्वान् रिपून् क्षणे जित्वा स पुमाञ्छ्रियमाप्नुयात् । अर्द्ध रात्रौ जले स्थित्वा, सप्तवारं पठेद् यदि ॥१५॥ क्षयापस्मारकुष्ठादि तापत्रयनिवारणम् । अर्किवारेऽश्वत्थमूले स्थित्वा पठति यः पुमान् ॥१६॥ अचलां श्रियमाप्नोति संग्रामे विजयी भवेत् ॥१७॥ यः करे धारयेन्नित्यं

सब अंगों की रक्षा महावीरजी करें, समस्त रोमों की रक्षा आत्मवान् करें । जो विद्वान प्राणी हनुमत्कवच को पढ़ता है ॥१३॥ वह पुरुष श्रेष्ठ भोग और मोक्ष को प्राप्त करता है तथा त्रिकाल या एक काल, तीन भाग तक पाठ करता है वह क्षण भर में समस्त शत्रुओं को रण में जीत कर परम शोभा को प्राप्त होता है ॥१४॥ यदि अर्ध रात्रि के समय जल में स्थित होकर इस कवच का सात बार पाठ करता है, तो वह क्षय अपस्मार (मृगी, हिस्टीरिया), कुष्ठ (कोढ़) एवं तीनों तापों (कायिक, वाचिक, मानसिक) से विनिर्मुक्त हो जाता है तथा जो प्राणी शनिश्चर के दिन पीपल के वृक्ष के मूल में स्थित होकर पढ़ता है वह अचल श्री (अचल लक्ष्मी) को पाता हुआ संग्राम में विजयी होता है ॥१५, १६, १७॥ विवाह में, जुआ खेलने में और उत्सव में, राजकुल में या रण में जो प्राणी इस हनुमत्कवच को अपने हाथ में धारण करता

स पुमान् श्रियमाप्नुयात् । विवाहद्यूतकाले च, दिव्ये राजकुले रणे ॥१८॥ भूतप्रेतमहादुर्गे रणे सागरसंप्लवे । दशवारं पठेद्रात्रौ मिताहारो जितेन्द्रियः ॥१९॥ विजयं लभते लोके, मानवेषु नराधिपः । सिंहव्याघ्रभये चौग्रे शरशस्त्रास्त्रपातने ॥२०॥ शृंखलाबन्धने चैव, काराग्रहणकारणे । क्रोधस्तम्भे वह्निदाहे, गात्ररोगे च दारुणे ॥२१॥ शोके महारणे चैव, ब्रह्मग्रहविनाशने ।

है वह अतुल लक्ष्मी प्राप्त करता है ॥१८॥ भूत-प्रेत बाधाओं में महान् दुर्ग (कठिन स्थल) में, रण में, सागर के पार करने में, अल्प भोजन करता हुआ जितेन्द्रिय होकर रात्रि में जो दस बार इसका पाठ करेगा ॥१९॥ वह प्राणी समस्त मनुष्यों में विजय को प्राप्त करेगा तथा सिंह-व्याघ्रों के भय को तथा उग्रशर अस्त्र-शस्त्र पातन आदि बाधाओं को बिना परिश्रम के पार कर लेगा ॥२०॥ कारागृह के कारण हथकड़ियों से शरीर के बँध जाने में, राज क्रोध के स्तम्भन में, अग्नि दाह पर, शारीरिक दारुण रोगों पर, शोक में, महारण में, ब्रह्मग्रह के विनाशन में प्राणी को नित्यप्रति हनुमत्कवच का पाठ करना चाहिये, ऐसा करने से अवश्य ही विजय

सर्वदा तु पठेन्नित्यं जयमाप्नोत्यसंशयः ॥२२॥ भूर्जेषु वसने, रक्ते क्षौमे वा तालपत्रके । त्रिगंधेनाथवा मस्या लिखित्वा धारयेन्नरः ॥२३॥ पंचसप्त त्रिलौहैर्वा गोपितं कवचं शुभम् । गले वा वाहुमूले वा, कण्ठे शिरसि धारितम् ॥२४॥ सर्वान् कामानवाप्नोति सत्यं श्रीरामभाषितम् ॥२५॥ उल्लंघ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं, यः शोक वह्निं जनकात्मजा यः । आदाय

प्राप्त होती है ॥२१-२२॥ भोजपत्र में, लाल कपड़े में, रेशमी वस्त्र में अथवा ताल के पत्ते पर इस हनुमत्कवच को त्रिगन्ध अथवा मसी (स्याही) से लिखकर बाँध लें और धारण करें ॥२३॥ पंचधातु सप्तधातु, अथवा त्रिधातु से रक्षित कवच को जो प्राणी गले में, बाहुमूल में, कंठ में अथवा सिर में धारण कर लेता है ॥२४॥ वह प्राणी समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है, यह श्रीरामजी का कहा हुआ वचन सत्य है ॥२५॥ जिन्होंने खेल में ही समुद्र को लाँघ कर जानकीजी की शोक रूप वह्नि को लेकर शोकाग्नि से लंकापुरी को जला दिया था, ऐसे उन आञ्जनेय (अंजनीसुत) हनुमानजी को मैं सांजलि

तेनैव ददाह लंका, नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥२६॥ ॐ हनुमानंजनीसूनुर्वायुपुत्रो महाबलः । श्रीरामेष्टः फाल्गुनसखः पिंगाक्षोऽमितिविक्रमः ॥ उदधिक्रमणश्चैव सीताशोकविनाशनः । लक्ष्मणप्राणदाताच दशग्रीवस्य दर्पहा ॥२७-२८॥ द्वादशैतानि नामानि, कपीन्द्रस्य महात्मनः। स्वापकाले प्रबोधे च यात्राकाले च यः पठेत् ॥२९॥ तस्य सर्वभयं नास्ति, रणे च विजयी भवेत् । धनं धान्यं भवेत् तस्य दुःखं नैव कदाचन ॥३०॥

प्रणाम करता हूँ ॥२६॥ १-हनुमान, २-अंजनीसूनु, ३-वायुपुत्र, ४-महाबली, ५-रामेष्ट, ६- फाल्गुन सखा, ७-पिंगाक्ष, ८-अमितविक्रम, ९-उदधिक्रमण, १०-सीताशोकविनाशन, ११- लक्ष्मणप्राणदाता, १२-दशग्रीवदर्पहा । इन द्वादश नामों को सोते उठते और यात्रा काल में जो स्मरण करता है । इसे किसी से भी भय नहीं होता और वह रण में विजयी होता है । वे मनुष्य धनधान्य से परिपूर्ण हो जाते हैं तथा उसे कभी कोई भी दुःख नहीं होता ॥३०॥

* श्री मन्मथारि सूनवे नमः *

* अथ पञ्चमुखी हनुमत्कवचम् *

ॐ अस्य श्री पञ्चमुखीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः ॥ श्री हनुमान देवता ॥ रां बीजम् ॥ मं शक्तिः ॥ चन्द्रं इति कीलकम् ॐ रौं कवचाय हुं, ह्रौं अस्त्राय फट् । इति पंचमुखीहनुमत्कवचस्य पाठे विनियोगः ।

ऐसा कह ताम्र पात्र में जल छोड़ दें ॥

* ईश्वर उवाच *

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि, शृणु सर्वाङ्ग सुन्दरम् । यत्कृतं देविदेवेशि, ध्यानं हनुमतः प्रियम् ॥१॥ पञ्चवक्त्रं महाभीमं कपियूथसम-

न्वितम् । बाहुभिर्दशभिर्युक्तं, सर्वकामार्थ सिद्धिदम् ॥२॥ पूर्वे वानरसद्वक्त्रं कोटि सूर्य समप्रभम् । दंष्ट्राकरालवदनं भ्रकुटिकुटि-लेक्षणम् ॥३॥ अस्येव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम् । अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥४॥ पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम् । सर्वनागप्रशमनं सर्वभूतादिकृन्तनम् ॥५॥

भगवान् शंकर जी ने एक दिन श्री पार्वतीजी से कहा कि इस पंचमुखी हनुमात्कवच स्तोत्र मंत्रका ब्रह्मा ऋषि, गायत्री छन्द, श्रीहनुमान देवता, रां बीज मं शक्ति, चन्द्र कीलक, रौं कवच और ह्रौं अस्त्र है। अब हे देव-देवेशि ! हनुमानजी का जो ध्यान किया गया है उस परमप्रिय सर्वांग सुन्दर ध्यान को मैं तुमसे कहता हूँ। तुम उसे सुनो ॥१॥ श्रीहनुमानजी का समस्त कामनाओं की सिद्धियों का देने वाला पाँच मुखों का एवं दश भुजाओं से युक्त कपियूथ समन्वित भीमकाय स्वरूप हैं ॥२॥ करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश करने वाले, बड़ी विकट दंष्ट्राओं से विकराल भृकुटि से कुटिल दृष्टि वाले, वानर के से मुख का पूर्व में ध्यान करें ॥३॥ इसी के दक्षिण की ओर वाला मुख अतीव अद्भुत एवं नृसिंह के समान हैं, यह मुख श्री हनुमानजी का विकराल भीषण एवं उग्र तेज वाला शरीर होते हुए भी नाशक हैं ॥४॥ श्री हनुमानजी का पश्चिम

उत्तरे शूकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तनभोमयम् । पाताले सिद्धवेतालज्वर-रोगादिकृन्तनम् ॥६॥ ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तरं परम्। येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र ताटकाया महाहवे ॥७॥ दुर्गतेः शरणं तस्य सर्वशत्रुहरं परम् । ध्यात्वा पंचमुखं रुद्रं हनुमन्तं दयानिधिम् ॥८॥ खंगं त्रिशूलं खट्वांगं, पाशमंकुशपर्वतम् । मुष्टौ तु मोदकौ वृक्षं, धारयन्तं कमण्डलुम् ॥९॥ भिन्दिपालं ज्ञानमुद्रां दशमं मुनि

से गरुड़ स्वरूपी मुख है जो कि महान् बलशाली एवं वक्र है तथा समस्त नागों एवं समस्त भूत-प्रेतों का नाशक है ॥५॥ उत्तर में शूकर (वाराह) के समान कृष्ण मुख है जो कि आकाश के समान भासमान है, तथा पाताल में वेताल सिद्धि और समस्त ज्वरादि रोगों का विनाशक है ॥६॥ हे विप्रेन्द्र ! ऊर्ध्व दिशा में घोर हय (घोड़ा) के समान मुख है दानवों का अत्यन्त नाश करने वाला है जिसने कि ताड़क के महान युद्ध में उपस्थित रहकर दानवों को नष्ट किया था ॥७॥ दुर्गति में शरण देने वाले सर्व शत्रुहार पञ्चमुख रुद्र दयानिधि हनुमानजी का ध्यान करें ॥८॥ खंग, त्रिशुल, खट्वांग, पाश, अंकुश, पर्वत एवं मुट्ठियों में मोदक, वृक्ष, कमण्डलु आदि को धारण करने वाले हनुमानजी ध्यान करें ॥९॥ हे मुनि श्रेष्ठ ! भिन्दिपाल,

पुंगव । एतान्यायुधजालानि, धारयन्तं भयापहम् ॥१०॥ दिव्यमाला-म्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वैश्वर्यमयं देवं, मद्विश्वतो मुखम् ॥११॥ पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णवक्त्रं सशंखविभृतं कपिराजवर्यम् । पीताम्बरादिमुकुटैरपि शोभमानं, पिंगाक्षमंजनिसुतंह्यनिशंस्म-रामि ॥१२॥ मर्कटस्य महोत्साहं, सर्वशोकविनाशनम् । शत्रु संहारकं चैतत् कवचं ह्यापदं हरेत् ॥१३॥

ज्ञान मुद्रा आदि दश आयुधों को धारण करने वाले और भय को नाश करने वाले श्री हनुमानजी का ध्यान करें ॥१०॥ दिव्य माला एवं दिव्य वस्त्रधारी तथा दिव्य चन्दानानुलेपी, समस्त ऐश्वर्यों वाले विश्वतोमुख श्रीहनुमानजी का ध्यान करें ॥११॥ पंचमुखी, अच्युत (अनश्वर) अनेक विचित्र वर्णों के मुख वाले सशंख, अनेक वाद्य युक्त कपिराजों में श्रेष्ठ पीताम्बर तथा मुकुटादिकों से सुशोभित पिंगाक्ष (पिली २ आँखों वाले) अंजनि सुत को मैं दिन रात स्मरण करता हूँ ॥१२॥ उत्साह का वर्धक, समस्त शोकों का विनाशक, शत्रु संहारक, यह हनुमानजी का कवच निश्चित ही सतस्त आपत्तियों को हरता है ॥१३॥

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा ॥१४॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय पूर्वकपिमुखाय सकलशत्रु संहारणाय स्वाहा ॥१५॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय उत्तरमुखाय आदिवराहाय सकलसम्पत्कराय स्वाहा ॥१६॥ ॐ नमो भगवते पंचवदनाय ऊर्ध्वमुखाय हयग्रीवाय सकलजनवश्यकराय स्वाहा ॥१७॥

इस मन्त्र के साथ-ही-साथ हाथ में जल लेकर निम्नलिखित विनियोग को भी पढ़ें-

ॐ अस्य श्रीपंचमुखीहनुमत्कवचस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषि-रनुष्टुप्छन्दः श्रीरामचन्द्रो देवता सीतेति बीजम् । हनुमानिति शक्तिः हनुमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

यह कहकर पात्र में थोड़ा जल छोड़ दें । फिर नीचे लिखा विनियोग करें ।

पुनर्हनुमानित बीजम् । ॐ वायुपुत्राय इति शक्तिः । अञ्जनी सुतायेति कीलकम् । श्रीरामचन्द्रवरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

यह विनियोग बोलकर पुनः जल पात्र में छोड़ दें ।

* अथ अङ्गन्यासः *

ॐ हं हनुमते अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वं वायुपुत्राय तर्जनीभ्यां नमः ॐ अं अंजनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः॥ ॐ रां रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः॥ ॐ रुं रुद्रमूर्तये कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ सीताशोकनिवारणाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ अंजनीसुताय हृदयाय नमः । ॐ रूद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा। ॐ वायुपुत्राय

शिखायै वषट् । ॐ कपियूथाय कवचाय हुम् । ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ पञ्चमुखिहनुमते अस्त्राय फट् ।

इन वाक्यों का न्यास करें ।

* अथ विनियोगः *

ॐ श्रीरामदूताय, अञ्जनेयाय, वायुपुत्राय, महाबलाय, सीताशोकनिवारणाय, महाबलप्रचंडाय, लंकापुरीदहनाय, फाल्गुनसखाय, कोलाहलसकलब्रह्मांडविश्वरूपाय, सप्तसमुद्रनिरन्तरोल्लाङ्घिताय, पिंगलनयनायामितविक्रमाय, सूर्यविम्बफलसेवाधिष्ठितनिराकृमाय । संजीवन्या अंगदलक्ष्मणमहाकपिसैन्यप्राणदात्रे, दशग्रीवविध्वंसनाय, रामेष्टाय, सीतासहरामचन्द्रवर प्रसादाय, षट्प्रयोगागमपञ्चमुखिहनुमन्मत्रजपे विनियोगः ॥

इतना कहकर पुनः जल भूमि पर छोड़ दें ।

ॐ हरिमर्कटमर्कटाय स्वाहा । ॐ हरिमर्कटमर्कटाय वं वं वं वं वं स्वाहा । ॐ हरि मर्कटमर्कटाय फं फं फं फं फं फट् स्वाहा । इति पूर्वे ॥ ॐ मर्कटमर्कटाय खं खं खं खं खं मारणाय स्वाहा । ॐ हरिमर्कटमर्कटाय ठं ठं ठं ठं ठं स्तम्भनाय स्वाहा ॥ इति दक्षिणे ॥ ॐ मर्कटमर्कटाय डं डं डं डं डं आकर्षणाय सकलसम्पत्कराय ॐ उच्चाटने ढं ढं ढं ढं ढं कूर्ममूर्तये पंचमुखिहनुमते परयंत्रपरतंत्रोच्चाटनाय स्वाहा। इति पश्चिमे ॥ ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं स्वाहा ॥ इत्युत्तरे ॥ इतिदिग्बन्धः ।

इन मन्त्रों से प्रति दिशा में पढ़ते हुए अक्षत छोड़े, इस प्रकार से दिगबन्ध होता है।

ॐ पूर्वकपिमुख पंचमुखि हनुमते ठं ठं ठं ठं ठं शकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा । ॐ दक्षिणमुखे पंचमुखिहनुमते करालवदनाय नरसिंहाय

ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रां सकलभूतप्रेतदमनाय स्वाहा ॥ ॐ पश्चिममुखे गरुडासनाय पंचमुखवीर हनुमते मं मं मं मं मं सकलविषहराय स्वाहा ॥ ऊँ उत्तरमुख आदि वराहाय लं लं लं लं लं नृसिंहाय नीलकण्ठाय पंचमुखिहनुमते स्वाहा ॥ ऊँ अंजनीसुताय वायुपुत्राय महाबलाय रामेष्टफाल्गुनसखाय सीताशोकनिवारणाय लक्ष्मणप्राणरक्षकाय कपिसैन्यप्रकाशाय सुग्रीवाभिमानदहनाय श्रीरामचन्द्रवरप्रसादकाय महावीर्याय प्रथमब्रह्माण्डनायकाय पंचमुखिहनुमते भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मराक्षसशाकिनीडाकिनी अन्तरिक्षग्रहपरमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्र सर्वग्रहोच्चाटनाय सकलशत्रुसंहारणाय पंचमुखिहनुमद्वरप्रसादक सर्वरक्षकाय जं जं जं जं जं स्वाहा ॥

इस प्रकार और भी दिगबन्ध करें ।

इदं कवचं पठित्वा तु महाकवचं पठेन्नरः । एकवारं पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम् ॥१८॥ द्विवारं तु पठेन्नित्यं, सर्वशत्रुनिवारणम् । त्रिवारं तु पठेन्नित्यं सर्वसम्पत्करं परम् ॥१९॥ चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्वलोकवशीकरम् । पंचवारं पठेन्नित्यं सर्वरोगनिवारणम् ॥२०॥ षड्वारं तु पठेन्नित्यं सर्वदेव वशीकरम् । सप्तवारं पठेन्नित्यं

साधक इस कवच को पढ़कर फिर एक बार भी इस महाकवच का नित्य पाठ करता है, तो उसके सभी शत्रु नष्ट हो जाते हैं ॥१८॥ जो नित्य प्रति इस कवच को दो बार पाठ करता है उसके समस्त शत्रुओं का निवारण होता है, तथा जो प्राणी तीन बार पाठ करता है उसे निखिल सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं ॥१९॥ जो प्राणी नित्य चार बार पाठ करता है वह समस्त लोकों को वशमें कर लेता तथा पाँच बार पढ़ने से समस्त रोगों का निवारण हो जाता है ॥२०॥ जो प्राणी छः बार नित्यप्रति इसे पढ़ता है वह सभी देवताओं को वश में कर लेता तथा जो सात बार पढ़ता है उसकी समस्त कामनाएँ सिद्ध होती हैं ॥२१॥ जो नित्य प्रति इस कवच का आठ बार पाठ करता है उसे समस्त सौभाग्य प्राप्त हो जाते है तथा जो नव बार नित्य

सर्वकामार्थसिद्धिदम् ॥२१॥ अष्टवारं पठेन्नित्यं सर्वसौभाग्यदायकम् । नववारं पठेन्नित्यं सर्वैश्वर्यप्रदायकम् ॥२२॥ दशवारं पठेन्नित्यं त्रैलोक्यज्ञानदर्शनम् । एकादशं पठेन्नित्यं सर्वसिद्धि लभेन्नरः ॥२३॥ कवचं स्मृतिमात्रेण, महालक्ष्मीफलप्रदम् । तस्माच्च प्रयता भाव्यं कार्यं हनुमतः प्रियम् ॥२४॥

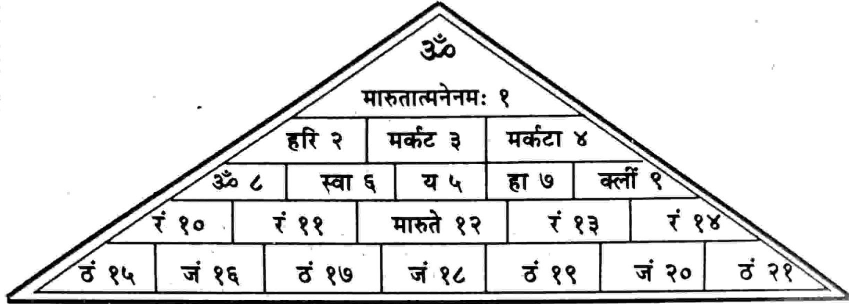
प्रति पाठ करता है उसे समस्त ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं ॥२२॥ जो साधक नित्य प्रति दश बार पढ़ता है उसे त्रैलोक्य का ज्ञान हो जाता है तथा जो ग्यारह बार पढ़ता है वह प्राणी समस्त सिद्धियों को प्राप्त कर लेता हैं ॥२३॥ इस कवच के केवल स्मृति (मात्र) से ही महालक्ष्मी प्राप्त होता है॥ इसलिये हनुमानजी के इस कवच का पाठ अत्यन्त प्रयत्न के द्वारा करना चाहिये । इस कवच के पाठ से हनुमानजी का प्रिय कार्य करना चाहिए ॥२४॥

॥ इति श्री पञ्चमुखि हनुमत्कवचम् ॥

*

* हनुमद् यन्त्रम् *

नीचे लिखे इस हनुमान जी के यन्त्र को चन्द्र या सूर्य ग्रहण के समय अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर ग्रीवा या दक्षिण भुजा में धारण करने से पुरुष के समस्त कार्यों की सिद्धि होती है तथा महाभय और समस्त रोगों से निर्मुक्त हो जाता है ।



卐 हनुमत् स्तुति 卐

तुम्हारे गुण गाऊँ हनुमान । हमें दो रामभक्ति रसखान ॥
महावीर अञ्जनि के जाये । श्रीराघव के तुम मन भाये ॥
पूजते तुमको सन्त सुजान । हमें दो रामभक्ति० ॥१॥
दुख दारिद्र्य दूर प्रभु कर दो । रामभक्ति का निर्मल वर दो ॥
मैं हूँ दीन, दास, अज्ञान । हमें दो रामभक्ति० ॥२॥
संकट काटो नाथ हमारे । द्वार खड़े सेवक हम सारे ॥
हमें भी कर दो सौख्य प्रदान । हमें दो रामभक्ति० ॥३॥
क्रोध काम लोभादि भगा दो । उर में ज्ञानोद्यान लगा दो ॥
मिटा दो 'धरणीधर' अज्ञान । हमें दो रामभक्ति० ॥४॥

卐 हनुमानजी की आरती 卐

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट-दलन रघुनाथ कला की॥ टेक॥
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष कछु निकट न व्यापे।
अंजनी पुत्र महा बलदाई, सन्तन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाये, लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोटि समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई।
लंका जारि असुर संहारे, सियाराम के काज सँवारे।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, आनि सँजीवन प्राण उबारे।
पैठ पताल तोरि यम कारे, अहिरावनकी भुजा उखारे।
बायें भुजा असुरदल मारे, दाहिने भुजा सन्तजन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारे, जै जै जै हनुमान उचारे।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजनी माई।
जो हनुमानजी की आरती गावै, बसि बैकुण्ठ अमरपद पावै।

卐 प्रार्थना 卐

* श्री जानकी रमणो विजयते *

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में। तू अकेला नहीं प्यारे, राम तेरे साथ में॥
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिये। जाही विधि राखे रम, ताही विधि रहिये॥
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये।

किया अभिमान तो फिर, मान ना पायेगा। होगा प्यारे वही जो श्रीराम जी को भायेगा॥
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये। जाही विधि राखे रमा ताही विधि रहिये॥
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये।

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के। महलों में राखे चाहे झोंपड़ी में वास दे॥
धन्यवाद निर्विवाद राम नाम कहिये। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये॥
सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये।

आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे। नाता एक रामजी से, दूजे नाता तोड़ दे॥
साधू संग राम रंग, अंग अंग ठगिये। काम रस त्याग प्यारे, रमा रस पगिये॥ जाही०
बिगरी जनम अनेक की, सुधरे अब ही आज। होउ राम को नाम जप, तुलसी तजि कुस साज॥
श्री सियावर रामचन्द्र जी महाराज की जय।